आठवाँ अध्याय
उपदेश की अमृतनिधि

कृषि-विभाग में इन्स्पेक्टर के पद पर काम करने वाले श्री साई महाराज के एक भक्त श्री नानासाहेब बेरे जब अपने मित्र के साथ बाबा के दर्शनार्थ गये तो बाबा ने उनसे कहा-''आप लोग तुरन्त ही यहाँ से चले जाय।'' श्री बाबा की आज्ञा शिराधार्थ कर बेरे वहाँ से चल दिये। उन्होंने ताँगे वाले से ताँगा तेज चलाने के लिय कहा। बेरे के मित्र एक दूसरे ताँगे में बैठे हूए पीछे-पीछे आ रहे थे। वे सब जोर से चिल्ला कर बोले-''क्यो भाई, इतनी जल्दी क्या है? अभी तो गाडी आने में काफी समय है। धीरे-धीरे मजें मे चलो।'' बेरे ने अपने मित्र की बात पर जरा भी ध्यान नही दिया; क्योंकि श्री साई महाराज में उनकी पूर्ण आस्था थी। अपने पिछले अनुभवों के आधार पर वह श्री बाबा के मुख से निकले हुए शब्दोंका अर्थ भली-भाँति समझते थे और इस समय भी उन्हे श्री बाबा के कथनका रहस्य ज्ञात हो गया। बेरे का ताँगा तो शीघ्रता से रास्ता पार कर निर्दिष्ट स्थान तक पहूँच गया; परन्तु, बेरे के मित्रों का ताँगा, जो पीछे धीरे-धीरे आ रहा था, जंगल में चोरों ने घेर लिया। चारोंने उनका सारा सामान लूट लिया और बेरे के सभी मित्रों को, जिन्होने उनकी हँसी उडाई थी, उन्हे बुरी तरह मारा-पीटा। जब बेरे को इस घटना का पता लगा तो उन्होंने श्री बाबा की लीला का रहस्य जाना और सब से कहा की श्री साई महाराज ने ही आज उनकी रक्षा की। श्री बाबा की इस लीला से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि वे कितने लाकोत्तर-परायण थे। लोगों को ऐसे अनेक अनुभव नित्य होते रहते थे। इसलिए श्री बाबा में भक्तों की प्रेममय श्रद्धा एवं निष्ठा दिन-रात बढती गई। लोगों में यह विश्वास उत्पन्न हो गया की श्री साई यथार्थ में सद्गुरू है और उनके दर्शनों के लिए भक्तों का ताँता बंध गया।

एक बार 'श्री साई सच्चरित' के लेखक हेमाडपन्त (दाभोलकर) की

गाडी का पहिया टूट गया; पंरतु श्री बाबा ने उनकी रक्षा की। अनेक भक्तों के सामने आकस्मिक और आकल्पिक विघ्न आ खडे हूए है; पंरतु, ऐसे प्रत्येक अवसर पर श्री साई बाबा उनके रक्षण के लिये सदैव तत्पर रहे। यह बात विशेषत: ध्यान मे रखनी चाहिये कि जिन भक्तों मे सहृदय श्री बाबा की आज्ञा की अवहेलना कर दी, श्री बाबा ने विपत्ति की घडियों में अपने दयालु अन्त:करण से उनकी भी रक्षा की है। अपने बालक के अपराध को क्षमा कर माता उसे सदैव स्नेह से अपने आंचल का आश्रय देती है। श्री बाबा का मन भी भक्तों के लिए वात्सल्य से पूर्ण था। ऐसा एक भी उदाहरण विदित नही, जिससे यह सिद्ध हो कि श्री बाबा ने किसी से निष्ठुरता का व्यवहार किया हो। श्री साई महाराज यद्यपि अति शीघ्र क्रोधित हो जाते थे, तथापि उन्होंने किसी भी भक्त को कभी हाथ नही लगाया। जब मन का संताप असह्य होता था, तो वे लाखो गालियाँ मुख से निकालते थे। शयनागार से द्वारकामाई तक जाते समय हाथ के डंडे को जोर-जोर से घुमाकर, मुख से गालियों की वर्षा करते हुए, उन्हे अनेक लोंगो ने देखा है। परन्तु, आश्चर्य की बात यह है कि ऐसे आवेश के क्षणों में भी, जब की उनके मुख से लगातार अपशब्द निकलते थे, वे प्रतिक्षण 'अल्ला तेरा अच्छा करेगा, भगवान तेरा भला करेगा,' यह भी बहुत ही दबी, किन्तु स्पष्ट आवाज में कहते जाते थे। अत्यधिक कोप की अवस्था में भी वे सामने आए हुए भक्त को पूर्ण शांति के साथ स्नेह भरा आशीर्वाद दिया करते थे। क्या यह किसी सामान्य मनुष्य के लिए संभव है? श्री साई तो काम, क्रोधादि वृत्तियों के वश में न आकर सदैव सत्स्वरूप में ही रमण करने वाले एक नित्यानंद साधु पुरूष थे। उनका क्रोध एक दिखावा मात्र ही होता था। श्री बाबा का अन्त:करण सावन के मेघ की भाँति दयार्द्र और सागर के सदृश गम्भीर था। मेघ गरजते है, सागर में भी तुफान उठता है। पंरतु दोनों ही अहर्निश अमृत वर्षा कर चराचर सृष्टि को समृद्ध एवं विकसित करने का प्रयत्न करते है। प्रकृति का यह चमत्कार श्री साई महाराज में भी

दृष्टिगोचर होता था।

एक बार द्वारकामाई में आरती के समय श्री बाबा ने एकाएक ही नृसिंहावतार का-सा स्वरूप धारण किया। आरती और नैवेद्य की सारी सामग्री एकदम बाहर फेंक दी। हाथ में सँभाला हुआ डंडा जोर-जोर से भूमि पर पटकना आरंभ किया। किसी को भी आरती नही करने दी वहाँ उपस्थित श्री दादासाहब खापर्डे भी भारी उलझन में पड गये। अन्त में थोडी देर बाद ही श्री बाबा का कोप शांन्त हुआ और उन्होंने 'म्हणाला' जाति के एक भक्त से, जो उनकी सेवा के लिए शिरडी में वास करता था, नित्य की भाँति अपनी पूजा-अर्चना करवाई। श्री बाबा के सन्ताप का कारण भी तब स्पष्ट हुआ। उनके एक भक्त को उस समय किसी फौजदारी अभियोग में अकारण ही बडा कष्ट सहन करना पड रहा था। इसलिये श्री बाबा का संताप असह्य हो उठा था। अन्त में श्री बाबा एक वकील के रूप में उस भक्त की सहायता के लिए पहूँचे और उसके मुक्त होने पर ही उनका क्रोध शान्त हुआ।

श्री साई महाराज की ऐसी लीलाओं का अर्थ समझना प्रत्येक व्यक्ति के लिये संभव नही था और इसीलिये कुछ भक्तों के मन में संकल्प-विकल्प उत्पन्न होते रहते थे। श्री बाबा की गालियाँ देने की जो लीला थी, उससे अनेक भक्तों के मन में शंकाओ का ताँडव नृत्य होने लगता था। वे सोचते थे कि सत्पुरूषोंकी वाणी तो शुद्ध और पवित्र होती है, फिर श्री बाबा ने यह निंदनीय मार्ग क्यो अपनाया? इस प्रश्न ने श्री बाबा के एक भक्त प्रो. नारके के मन में भी घर कर लिया और उन्होनें सुप्रसिद्ध सन्त श्री माली महाराज के सम्मुख अपनी शंका उपस्थित की। माली महाराज को अपशब्द कहते हूए सुना है ? सुना है, तो अपनी आँखो से देखा हुआ कोई उदाहरण मेरे सामने रखो। इस पर प्रोफेसर साहब ने तुरन्त उत्तर दिया-''अभी कुछ ही महिनों कि बात है, मैं शिरडी गया था। वहाँ द्वारकामाई के बाहर एक गरीब हरिजन स्त्री श्री बाबा के दर्शन के लिए खडी थी। उसकी ओर देखते हुए श्री बाबा ने

अनाप-शनाप गालियाँ सुनानी आरंभ की। यह सब कुछ मैने स्वयं देखा और सुना।''

माली महाराज कुछ क्षण ध्यानमग्न बैठे रही और फिर हँस कर बोले- ''साधुओं की निराली बातों का अर्थ आप नही समझ सकते। साई महाराज के चमत्कार मानवीय बुद्धि मे सरलता से आने वाले नही होते। साई महाराज ने अपशब्दों का उच्चारण कर उस स्त्री को वास्तव में जो चाहिए था, वही दिया। चाहे तो आप उस स्त्री के गाँव जाकर उससे स्वयं मिलें और अपने मन का समाधान करें। वह स्त्री महाराज के पास संतति-प्राप्ति की इच्छा से गई थी। साई महाराज के मुख से निकले हुए अश्लील तथा कर्ण-कटु वचनों के फलस्वरूप ही उस संतति-विहीन स्त्री की गोद भर गई। श्री बाबा की कृपा से आज वह एक बच्चे की माँ बनी है।''

श्री साई की लीलाएँ ऐसी ही विलक्षण होती थी। अनेक अवसरों पर भक्तों को श्री बाबा के शब्दों का स्पष्ट अर्थ ही ज्ञात नही होता था। पंरतु, श्री बाबा के भक्तों में से म्हालसापति, नानासाहेब चाँदोरकर, दासगणू महाराज आदि पु राने तथा अनुभवी भक्त श्री बाबा की सांकेतिक भाषा समझने में आति कुशल थे। ये भक्त श्री बाबा के शब्दों का ठीक-ठीक अर्थ जान कर दुविधा ग्रस्त भक्तों को समझा-बुझा दिया करते थे। श्री बाबा की उपदेश देने की पद्धति शाब्दिक न होकर अनुभवों क आधार पर होती थी। इसलिए वे शब्दों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व नही देते थे। जिव्हा पर जो आया, वह कह ही देते थे। किसी भी गहन-गूढ विषय को लेकर श्री साई विस्तृत व्याख्यान देने के आदी नही थे। सूत्र की तरह बहुत ही थोडे शब्दों मे तथा संक्षिप्त वाक्यों मे अपने मन का भाव प्रकट कर, किसी भी व्यक्ती का पूर्ण समाधान करने का अद्‌भुत सामर्थ्य उनकी वाणी मे था। पुँगी के मंजुल नाद से नृत्य करने वाले विषैले नागों की भाँति ही श्री बाबा भी आये हुए किसी भी दुष्ट प्रकृतिवाले या नीच व्यक्ति के मन को संपूर्णत: प्रभावित कर सकते थे।

श्री बाबा के मुख से निकले हुए इने-गिने संक्षिप्त शब्द बहुत मूल्यवान तथा सदुपदेश से ओत-प्रोत होते थे।

एक दिन आरती समाप्त होने के पश्चात् श्री साई महाराज ने अत्यन्त शान्तिपूर्वक तथा गंभीरता से वहाँ एकत्रित भक्तों को सदुपदेश दिया। उन्होंने कहा-''मेरे प्रिय भक्तों, आप कही भी हो, कुछ भी करें, परंतु एक बात सदैव ध्यान में रखो कि आपकी सभी बुरी-भली बातें मुझे तुरंत ही ज्ञात हो जाती है। मैं सभी भक्तों के अंत:करण में प्रवेश कर उनसे संबंधित समस्त चल ओर अचल वस्तुओं को परमेश्वर की आज्ञा से सूत्रधार के रूप में गति देता हूँ। परंतु, मेरे हाथों में यह मायापटल दूर करने की ईश्वरदत्त शक्ति है। इसीलिये मैं किसी भी व्यक्ती का, उसका कार्य सुचारूरूप से पूर्ण करने के लिये उचित मार्गदर्शन कर सकता हूँ। प्रत्येक व्यक्ति का उद्धार करना ही हमारे इस जन्म का कार्य है। साधक अवस्था में संसार के मोह-पाश में फँसे हुये जीवों पर धीरे-धीरे शुद्ध स्वरूप के संस्कार डालकर उन्हें पूर्ण परब्रम्हावस्था में पहूँचाना, ही हमारा अंतिम ध्येय है। केवल भेद इतना ही है कि अपनी गुरू-परम्परा के अनुसार हमारा मार्ग अन्य संतों के मार्ग से थोडा भिन्न है।''

श्री साई महाराज के उपदेश का परिणाम तत्काल ही दृष्टिगोचर होता था और भक्त को तत्क्षण कोई बुरे कर्म करने का पश्चाताप भी होता था। यह एक वकील साहब के उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है। एक बार एक वकिल साहब की ओर सहज भाव से दृष्टिक्षेप करते हुए कहा-''लोग भी देखिये कितने चालाक होते है। यहाँ आकर प्रणाम करते है, दक्षिणा देते है, परंतु मन में गालियाँ भी देते है।'' ये शब्द श्री बाबा किस व्यक्ति को लक्ष्य बनाकर कह रहे थे, यह किसी के भी ध्यान में नही आया दोपहर को भोजन के बाद जब वहाँ उपस्थित भक्त लोग विश्राम कर रहे थे, तो प्रात:काल आये हुए वकील साहब स्वयं ही बोले-''सुबह बाबा ने जो शब्द कहे थे, वे मेरे ही संबंध में थे। हमारे मुन्सिक साहब बाबा से प्रभावित हुए हैं। यहाँ आने के पूर्व एक दिन हम वकील

लोग एकत्रित हुए थे। उस समय मैने मुन्सिफ साहब का मजाक उडाया था। इसी प्रसंग में मैं श्री बाबा की भली भाँति भर्त्सना कर बैठा था। मुझे देखते ही उन्होंने मेरे कुकृत्य का मुझे स्मरण कराया। मुझे अच्छी शिक्षा मिली। भविष्य में मै कभी भी इस प्रकार का दु:साहस नही करूंगा।''

वकील साहब की भाँति अनेक भक्तों को नित्य ऐसे अनुभव होते रहते थे और भक्तों के मन में यह भावना घर कर गई थी की श्री साई अपने अंतर्ज्ञान से भक्तों की सारी बातें जान लेते है। मन में थोडा-सा भी विकार उत्पन्न हुआ हो या अपने विचार चाहे किसी से भी प्रकट न किये हों तो भी श्री बाबा अंतर्ज्ञान से उसे जान लेते है, यह दृढ भावना भक्तों के मन में बैंठ गई थी। इस कारण स्वाभाविक ही भक्तों के मन अत्यन्त प्रभावित हो चुके थे और उनके मन तथा आचरण दोनों ही क्रमश: निर्मल होते जाते थे। किसी के लिए जादू के डंडे से अनेक जन्मों के संस्कार संपूर्णत: बदलना संभव नही है, फिर भी श्री साई महाराज की लीलाओं तथा उपदेशो से भक्तों की वृत्ति में शनै: शनै: अवश्य ही परिवर्तन हो जाता था और भक्तों को अंत:करण की गूढ वृत्तियों में सूक्ष्म कंपन परिवर्तन होने का प्रत्यक्ष अनुभव होता था। अनुभवों के द्वारा श्री साई की सर्वज्ञता का विश्वास मन में उत्पन्न होने से भक्तों का धैर्य बढता था। श्री बाबा के विषय में पहले मन मे जो भय उत्पन्न होता था, वह धीरे-धीरे नष्ट हो जाता और यह भावना उद्‌भुत होती थी की ''सहृदय श्री साई माता-पिता के समान ही हमें सँभालने कि लिये सदैव तत्पर हैं, हमें घबराने का कोई कारण नही।'' भक्तों के मन में इस प्रकार का आत्म-विश्वास सहज ही बैठ जाता और उनके मन में पवित्र संस्कारों का उदय होता था।

श्री साई नाथ महाराज ने लोगों को भक्ती-मार्ग दिखला कर उन्हें अपने इष्ट देवी-देवताओं की शास्त्रानुकूल आराधना तथा पुजा करने की शिक्षा दी। स्वयं उनके मुख से परामात्मा के नाम का अखण्ड जप चलता ही

रहता था। रात्रि में निद्रावस्था में होते हुए भी जानबुझ कर आँखे बंद कर निद्रावस्था में होने का भान कराते थे। केवल श्री बाबा के दर्शन मात्र से भक्तों अंत:करण में भक्ति की लहरें तरंगित होती थी और उनकी ओर देखने मात्र से भक्तों की आँखो के सामने उनके आराध्य देवता की मंगलमय प्रतिमा आ खडी होती थी। इस चमत्कार का अनुभव एक-दो नही, अनेक भक्तों को हो चुका है। श्री बाबा के एक भक्त गौलीबुवा को जो साक्षात्कार हुआ, वह वास्तव में विचारणीय है।

गौलीबुवा श्री साई के बहुत पुराने भक्तों मे से एक थे। वर्ष के आठ माह वे पंढरपूर में श्री विठ्ठल के चरणों में बिताते थे और बाकी चार महीने गोदावरी के तट पर इधर-उधर भ्रमण करने में व्यतीत करते थे। प्रति वर्ष पंढरपूर में श्री विठ्ठल के दर्शनार्थ जाने के पूर्व वे श्री साईनाथ महाराज के दर्शनों के लिये शिरडी भी आते थे। उनके साथ उनका परिवार तथा शिष्य-मंडली भी होती थी। जब वे श्री बाबा के दर्शनार्थ आते थे तो एकाग्रचित्त से ध्यानस्थ श्री साई की दृष्टि की ओर देखते हुए बैठ जाया करते थे। समाधि भंग होने के बाद गौलीबुवा अपनी शिष्य-मंडली को कहते थे-''दीन-दयाधन परम दयालु साई तो पंढरी के श्री विठोबा के प्रत्यक्ष अवतार है। साई महाराज की व्यर्थ ही स्तुति करने के हेतु से मैं यह नही कह रहा हूँ। परंतु, बिल्कुल निर्मल एवं शुद्ध पवित्र बुद्धि से मै कहता हूँ कि साई के रूप में प्रत्यक्ष विठ्ठल ने मुझे दर्शन दिये है।'' गौलीबुवा की भाँति अन्य सामान्य व्यक्तियों को भी ऐसे ही अनेक अनुभव हो चुके है; परंतु, ग्रंथ विस्तार के भय से उनका वर्णन यहाँ नहीं किया जा सकता।

अपने भक्तों के प्रति श्री साई महाराज के मन में पूर्ण गर्व और स्नेह भरा रहता था। किसी भक्त पर दैवगति से यदि कोई आपत्ति आ जाती तो श्री बाबा का संताप भी असह्य हो जाता था। श्री बाबा के तन-बदन में भी मानो आग लग जाती थी। अपना सारा सामर्थ्य जुटा कर वे भक्त को संकट-मुक्त

करते थे या कम-से-कम उसकी रक्षा करने का प्रयत्न तो करते ही थे। 'श्री साई सच्चरित्र' के लेखक श्री हेमाडपन्त ने श्री साईनाथ महाराज की लीलाओं का विशेष गहराई और बुद्धिमतापूर्वक अध्ययन किया है। एक बार श्री साई महाराज ने उनसे कहा-''वैसे तो इस संसारमे हर एक को सुख दुःख भोगने ही पडेंगे, परंतु मै अपने एकनिष्ठ भक्त को कुटुंब-निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुओं की यानी अन्न-वस्त्र आदि की कभी भी कमी अनुभव होने नही दूँगा। मुझ जैसे एक अकिंचन फकीर से भक्तों को अधिक आशा नही रखनी चाहिए। क्षणभुंगर संपत्ति और मान-मान्यता के सम्बन्ध में झूठी आशाओं को मन में स्थान न दो। जो बातें मेंरी शक्ति के बाहर की है, उन्हे पाने के लिये मेरे चरणों का आसरा न लो। उसके बदले में यदि आप सच्चिदानंद दयाधन प्रभु कि एकनिष्ठता से आराधना करेंगे तो वही आपकी पुकार सुनकर आपकी रक्षा के लिये दौडकर आयेगा। हम तो निमित्त मात्र के लिये परमेश्वर के बंदे, गुलाम है। किसी भी धर्म के परमेश्वर का ध्यान एक बान मन में निश्चित कर लो। अनन्य भाव और परम भक्ति से अपने इष्ट देवता की आराधना करो और फिर आपको मुझ में द्वैत भाव दिखाई नही देगा। मन की एकाग्रता तथा समाधि की पूर्व स्थिति प्राप्त करने के लिए अपना मन सदैव शुभ या शिव-संकल्पो की ओर प्रवृत्त करना चाहिये। दुष्ट, नीच विचारों के परित्याग कर सदैव सदाचरण से जीवन व्यतीत करनेवाले मित्रों की ही संगती करनी चाहिये।'' श्री महाराज की हेमाडपन्त से कही हुई बातें सचमुच ही भक्तों के हाथ आई हूई एक अमृतनिधी है। श्रद्धालु भक्तों के लिये तो इसका एक-एक शब्द लाख-लाख के मोल का सिद्ध होता है।

❋ ❋ ❋ ❋ ❋